भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए 29 जुलाई से 03 अगस्त, 2015 साप्ताहिक सलाह

(37 वां मानक सप्ताह)

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

	जुलाई			अगस्त			Advisory
दिनांक	**29**	**30**	**31**	**1**	**2**	**3**	
पंजाब							इस सप्ताह मौसम साफ रहेगा। किसानों को आवश्यकतानुसार विशेष रूप से हल्की जमीन वाली फसल में सिंचाई देने की सलाह दी जाती है। पुष्पन प्रारंभ होने पर नत्र की अंतिम मात्रा फसल को दें। जैसिड और सफेद मक्खी की संख्या पुनः बढ़ सकती है। इसके लिए नियमित खोजी सर्वेक्षण जारी रखने की सलाह दी जाती है। जिन क्षेत्रों में अधिक आर्द्रता तथा तापमान के साथ बादलों का मौसम रहेगा वहाँ पत्तियों पर जीवाणु गलन दिखाई दे सकती है। नाशीकीट एवं रोगों के नियंत्रण के लिए केवल आर्थिक हानि स्तर पर सिफारिश किए गए उपाय दिन के साफ मौसम में प्रारंभ किए जा सकते हैं। जिन क्षेत्रों में भारी वर्षा , बादल फटने की घटना हुई हैं वहाँ आकस्मिक मुरझान दिखाई दे सकती है। इ से प्रभावित पौधों पर कोबाल्ट क्लोराईड का 10 मिग्रा. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करके नियंत्रित किया जा सकता है। मिलीबग का परजीव्याभ *एनासियस* इस समय फसल पर सक्रिय होने के कारण मिलीबग नियंत्रण के लिए किसी रासायनिक कीटनाशक का छिड़काव न करें।
भटिंडा	0	0	0	14	14	4	
फिरोजपुर	0	0	0	14	13	3	
मुकतसर	0	0	0	11	15	3	
मानसा	0	0	0	6	17	6	
हरियाणा							
सिरसा	0	0	10	13	14	0	
हिसार	0	0	0	0	6	4	
फ़तेहाबाद	0	0	0	3	9	6	
राजस्थान							श्रीगंगानगर/हनुमानगढ़ क्षेत्रों में हल्की से मध्यम वर्षा तथा बांसवाड़ा क्षेत्र में भारी वर्षा का पूर्वानुमान है। जैसिड और सफेद मक्खी का प्रकोप दिखाई दे सकता है। किसी भी हालत में पाइरेथ्राईड समूह अथवा फि प्रोनिल का छिड़काव न करें क्योंकि इनके प्रयोग से सफेद मक्खी और बढ़ जाएगी। लक्षणों के आधार पर जड़ गलन (मुरझान) तथा आकस्मिक मुरझान के लिए विशिष्ट नियंत्रण उपाय प्रारंभ किए जा सक ते हैं। साफ मौसम वाले दिन केवल आर्थिक हानि स्तर पर ही ना शीकीट व रोगों के नियंत्रण उपाय प्रारंभ किए जा सकते हैं।
हनुमानगढ़	0	4	35	25	14	5	
श्रीगंगानगर	0	27	35	25	17	9	
बांसवाड़ा	229	58	8	3	0	0	
उड़ीसा							
कोरापुट	0	9	9	18	22	32	पूरे सप्ताह मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। बुवाई कार्य पूरा हो चुका है। फसल वानस्पतिक अवस्था में है। यथासंभव निराई-गुड़ाई करने की सलाह दी जाती है। निराई के बाद रासायनिक उर्वरक देने तथा मिट्टी चढ़ाने के कार्य करें। सप्ताह के अंत में अच्छी वर्षा हो सकती है। हरी खाद के लिए सनई को मृदा में मिलाएँ। वर्षा को देखते हुए कीटनाशकों का छिड़काव न करें।
कालाहांडी	0	3	13	19	73	75	
बोलांगीर	0	0	20	15	79	59	
गुजरात							
अमरेली	64	0	0	0	0	0	इस सप्ताह के सुरूआत में अच्छी वर्षा होने का अनुमान है। किसानों को सलाह दी जाती हैं कि अतिरिक्त वर्षाजल को खेत से निकालें। सफेद मक्खी और जैसिड का प्रकोप कम हो जाने का अनुमान है। नियमित खोजी सर्वे जारी रखें। साफ मौसम वाले दिन केवल आर्थिक हानि सीमा आने पर ही नाशीकीट/रोग नियंत्रण के
भावनगर	38	0	0	0	0	0	
जामनगर	34	0	0	0	0	0	
अहमदाबाद	53	0	0	0	0	0	
सुरेन्द्रनगर	78	16	10	6	4	3	

वडोदरा	183	50	6	0	0	0	सिफारिश किए गए उपाय अपनाएँ। मुरझान और जड़गलन की समस्या से निपटने के लिए यहाँ दिए गए सिफारिश किए गए नियंत्रण उपाय प्राथमिकता के अनुसार अपनाएँ। गुलाबी सूँडी से क्षतिग्रस्त गुलाबवत फूलों की उपस्थिति के लिए यहाँ तक कि बी टी कपास पर भी पुष्पन के प्रारंभ से ही खोजी सर्वे करते रहें।
राजकोट	141	0	0	0	0	0	
भरूच	131	0	0	0	0	0	
पाटन	70	62	37	20	16	17	
सबरकांठा	77	10	0	0	0	0	
मेहसाना	112	13	0	0	0	0	
मध्यप्रदेश							बुआई की तारीख के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों में फसल लगभग 30 से 45 दिनों की है। इस समय सतत वर्षा हो रही है। वर्षा रहित दिनों मे मृदा में नत्र-स्फुरद रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करें। वर्षा के बाद मुरझान और जड़ गलन की समस्या आ सकती है। इस समस्या को प्राथमिकता के आधार पर परामर्शी में सिफारिश किए गए उपायों के अनुसार नियंत्रण में रखें। रस चूषक कीटों के लिए कीटनाशक का छिड़काव न करें।
खरगोन	31	11	5	0	0	3	
धार	113	40	3	0	0	0	
खंडवा	15	10	7	0	0	12	
महाराष्ट्र							
नागपुर	3	0	0	0	11	201	सिंचित खेतों में फसल लघुकली निर्माण अवस्था में तथा बारानी स्थिति में वानस्पतिक से कलि निर्मान अवस्था में है। खरपतवार प्रबंधन के लिए अंतःशस्य क्रियाएँ अपनाएँ। बारानी फसल में नमी संरक्षण उपाय अपनाएँ। बारानी कपास में उर्वरकों की आधार-मात्रा, यदि पहले नहीं दी है तो तुरंत दें। कली निर्माण प्रारंभ होने पर बारानी कपास में नत्र की मात्रा मृदा में दें। साफ मौसम में खरपतवार प्रबंधन के लिए खरपतवार नाशकों का अंकुरण-बाद छिड़काव किया जा सकता है। कपास में जैसिड और सफेद मक्खी का प्रकोप दिखाई दे सकता है। बी टी रहित कपास में करड़ी की इल्ली को अक्सर *हेलिकोवर्पा आर्मिजेरा* समझ लिया जाता है। कपास में इस कीट के लिए कोई नियंत्रण उपाय करने की आवश्यकता नहीं है।
वर्धा	5	0	0	0	0	157	
चंद्रपुर	0						
यवतमाल	5	0	0	0	0	72	
अमरावती	15	7	5	4	7	53	
अकोला	13	3	3	0	0	18	
बुलढाना	16	10	9	0	0	8	
परभणी	4	0	0	0	0	7	
नांदेड़	3	0	0	0	0	13	
बीड़	3	0	0	0	0	6	
वासिम	9	0	0	0	3	18	
धुले	47	46	28	16	10	7	
जलगांव	19	10	9	0	0	3	
जालना	4	0	0	0	0	5	
औरंगाबाद	23	24	13	13	12	0	
तेलंगाना							इस सप्ताह छिटपुट वर्षा की संभावना है। फसल पूर्व वानस्पतिक अवस्था में है। ग्रीष्मकालीन कपास में तेज हवाओं और अधिक तापमान से मंद फसल वृध्दी, पत्तियों के पीला अथवा लाल होने की अवस्था से निपटने के लिए फसल पर 1.0 से 2.0% पोटेशियम नाईट्रेट + 1.0% मेग्नीशियम सल्फेट का छिडकाव एक सप्ताह के अंतराल में दो बार करें।मृदा में पर्याप्त नमी होने पर नत्र तथा पोटाश उर्वरकों के अनुप्रयोग की सिफारिश की जाती है। बारानी कपास में किसान नमी संरक्षण उपाय के रूप में अंतःसस्य क्रियाएँ करें। फूलकीट तथा सफेद मक्खी की संख्या बढ़ सकती है। इसके लिए फसल पर रासायनिक कीटनाशकों का छिडकाव न करें। कपास के खेतों की मेंढ़ों को खरपतवार मुक्त व साफ-सुथरा रखें जिससे नाशीकीट एवं रोगों के प्रारंभिक निवेशन से बचा जा सकता है।
आदिलाबाद	0	4	0	0	0	26	
वारंगल	0	4	0	3	4	7	
खम्मन	0	3	3	5	5	8	
कारिंगर	0	4	0	0	4	7	
नालगोंडा	0	4	0	5	4	0	
आंध्रप्रदेश							
गुन्टूर	0	0	0	6	5	3	
प्रकासम	3	0	0	7	10	6	
कर्नाटक							उत्तरी जिलों में मध्यम वर्षा की संभावना है। 30 तथा 50 दिनों की फसल पर 25 किग्रा नत्र/हे (50 किग्रा यूरिया/हे) तथा 12 किग्रा पोटाश (20 किग्रा म्यूरेट औफ पोटाश/हे) अनुप्रयोग करें। इस सप्ताह में देशी कपास क़िस्मों (जयधर , डीडीएचसी-11 व आर एएचएस-14) की बुवाई जारी रख
धारवाड़	26	13	33	37	55	72	
हवेरी	32	14	39	46	70	81	

मैसूर	0	3	0	0	10	38	सकते हैं। प्याज और मिर्च की फसल में अंतः फसल के रूप में। इस सप्ताह तथा आगामी कुछ दिनों के लिए अच्छी वर्षा के साथ बादलों का मौसम रहेगा। नाशीकीटों/रोगों का नियमित खोजी सर्वे जारी रखने की सिफारिश की जाती है। साफ मौसम के दिन आर्थिक हानि सीमा पर नाशीकीटों/रोगों के सिफारिश किए गए नियंत्रण उपाय प्रारंभ किए जा सकते हैं।
तमिलनाडु							
पेरंबलुर	0	0	0	0	5	0	इस सप्ताह रुक-रुक कर वर्षा होने तथा आसमान में बादल छाए रहने का पूर्वानुमान है। ग्रीष्मकालीन बुआई की गई कपास में चुनाई का कार्य चल रहा है। शीतकालीन सिंचित खेतों में खेतों की तैयारी चल रही है।
सलेम	5	0	0	6	8	4	
त्रिची	0	0	0	0	0	0	
विरुडुनगर	0	0	0	0	3	6	

संकेत	< 5	5–20	20–50	50–80	> 80
वर्षा मि.मी					

सीआईसीआर द्वारा प्रबंधन रणनीति की सफारिशें:

(के.आर. क्रांति द्वारा ल खत: इस सलाह का कोई हिस्सा कसी भी प्रकाशन इलेक्ट्रॉनिक या प्रंट या कस अन्य साधन में कसी भी रूप में लेखक के अनुमति के बिना इस्तेमाल कया जा सकता है।)

इस सं क्षप्त नोटमेंप्रबंधन रणनीति की सफारिशें सीआईसीआर कए गए प्रयोगों के परिणामों के आधार पर और व भन्न राष्ट्रीय और वैश्विक एजें सयों द्वारा वक सतपारिस्थिति के अनुरूप वक सत दिशा-निर्देशों के आधार पर कया जा रहा है।

समान्य फसल स्वास्थ्य प्रबंधन:

1. जल्दी परिपक्वहोने वाले या संकर-बीटी-कपास कस्मों को वर्षा सं चत क्षेत्रों में प्राथ मकता दिया जा सकताहै।
2. पहली बारिश(80 ममी) वर्षा के तुरंत के बाद वर्षा सं चत क्षेत्रों में जल्दी बुवाई को प्राथ मकता दिया जाना चाहिए।
3. वर्षा सं चत क्षेत्रों में वशेष रूप से उच्च घनत्व रोपण व ध में लकीरें (रिजेज़) पर बुआईसबसेज्यादा कया जाता है।
4. वर्षा सं चत क्षेत्रों में जहां सचाई सु वधा हो वहाँ संकर-बीटी-कपास 90X30 सेमी दूरी पर अ धक चौड़ाई (व्यापक रिक्ति) में बोया जा सकता है।
5. गैर बीटी कस्मों सूरज जैसे (सीआईसीआर) एनएच 615, (वी.एन.-भी, परभणी), एकेएच 081 (डॉ पीडीकेवीअकोला), फुले धन्वन्तरी (एमपीकेवी राहुरी) और अंज ल (एलआरके516) जल्दी परिपक्वहोने वाली कस्में हैं यदि इन कस्मों को उच्च घनत्व में 15 जून से पहले 60**x**10 (फुलेधन्वन्तरी के लए 40x10cm) सेमी दूरी पर रोपण कया जाता हैतो सूखा तनाव और बोलवर्मके प्रकोप से फसल बच जाएगा।
6. गैर बीटी कपास की कस्मों की दो पंक्तियो के बीच एक पंक्ति में ब्रेडायरिजोबियम जेपेनिकम से उपचारित लोबिया या सोयाबीन के बीज को 45 सेमी दूरी पर वैकल्पिक (आल्टर्नेट) पंक्तियों में 10 सेमी पौधे से पौधे दूरी पर लगाया जासकता है।
7. अंतर फसल (इंटर क्रो पंग) में सोयाबीन या लोबिया के बीज कोब्रेडायरिजोबियम जेपेनिकमसे उपचरित कर संकर बीटी के साथ लगाया जा सकता है।
8. कपास के खेतों की सीमा पंक्तियों में अरहर की (2-3 पंक्तियाँ) लगाने से मली बग (आटे के कीड़े) का प्रकोप को रोकने के लए सहायक होगा और ये रिफ़्यूजिया **(refugia)** के रूप में सेवा करते हैं।
9. पहली बारिश के बाद फार्म खाद या कम्पोस्ट 5 से 10 टन / हेक्टेयर की दर से खेतो में डाला जाना चाहिए।
10. एजोबेक्टर और पीएसबी 25 ग्राम प्रति कलोग्राम बीज की दर से पोषक तत्वों नियतन (फ़क्सेशन) के लए इस्तेमाल कया जाना चाहिए।
11. क्राइ 1 एसी (Cry1Ac) की उ चतअ भव्यक्ति सुनिश्चित करने के लए और पत्ता लाल रोग की समस्या को कम करने के लए 1% कोबाल्ट क्लोराइड का छिड़काव करें। स्थूल और सूक्ष्म पोषक के लए अनुकूल पोषक तत्व प्रबंधनक्राइ 1 एसी (Cry1Ac) की उ चतअ भव्यक्ति सुनिश्चित करने और पत्ता लाल रोग की समस्याओं को कम करने के लए **$MgSO_4$**2% यूरिया के साथ 2% डीएपी का छिड़काव करें। वल्ट के प्रारं भक चरण में पौधों की रिकवरी के लए 1% कोबाल्ट क्लोराइडका छिड़काव तथा 1% बाबेस्टीन से तने के आस पास की म ी को गीला (तर) करें यह फसल की तंदरुस्ती के लए मददगार पाया गया है।

12. पत्ता लाल रोग का निवारण:90 दिन के फसल मे 2% यूरिया,0.5% जिंक सल्फेट और 0.2% बोरान दो बार में 15 दिनों के अंतरालमें छिड़काव से लाल पत्ता रोग से बचाव होगा।
13. क लयों (स्क्वेयर) और फूलों का झड़ना रोकने के लए फनोलेक्स 4.5 एसएल ((एनएए) हार्मोन, 21 पीपीएम 7 लीटर प्रति 15 लीटर पानी के दर से मला कर स्प्रेकरें।

कीटोंएवं रस चूसक कीटों काप्रबंधन:

सामान्य सफारिशें

ये करें:

1. कीट एवं रस चूसक कीट प्रतिरोधी कस्मों/संकरोंका चयन करें। बीटी संकर कस्में कीट एवं रस चूसक कीटप्रतिरोधी होते हैं इनमें कीटनाशकों के छिड़काव की आवश्यकता बहुत कम होती है।
2. कपास के फसल के साथ लोबिया या चारा (सोरगम) या सोयाबीन अथवा काले चने के साथ अंतर-फसल (इंटर-क्राप) लगाने से चूसक कीटों के भक्षक/शकारी कीटों (प्रडेटर) की वृ द्ध के प्रोत्साहन के लएलगाना चाहिए।
3. इमेडाक्लो फ्रड 8 ग्राम, वटावेक्स या थरम 3 ग्राम प्रति कलोग्राम बीज में उपयोग से चूसक कीट (स कंग पेस्ट) और रोगों के खलाफ फसल की रक्षा करेगा।
4. चूसक कीट के लए वशेष रूप से अतिसंवेदनशील कस्मों में नाइट्रोजन उर्वरकों का उपयोग करने से इससे होने वाले नुकसान को बहुत कम करता है।
5. खेत की स्वच्छता (घाँस मुक्त) बनाए रखें।
6. मली बग संक्र मत पौधों को बाहर निकालें और कपास के खेत से दूर नस्ट करें।
7. कम वघटनकारी कीट प्रबंधन के लए नीम से तैयारकीटनाशक और जै वक नियंत्रण वकल्पका उपयोग करें।
8. गुलाबी सूँडी (पंक बोलवर्म) की निगरानी के लए फेरोमोन ट्रेपका उपयोग कुशल एवं प्रभावकारी साधन है।
9. मरीड बग, मली बग और अन्य चूसक कीटों (स कंग पेस्ट) के प्रभावी एवं पर्यावरण के अनुकूल नियंत्रण के लए पौधों के तनों में और जड़ों के आस पास इमेड़ाक्लो फ्रड डाइमेथोयेट या ए सफेट 30-40 डीएएस और 50-60 डीएएस का उपयोग प्रभावी नियंत्रण के लए करें।

ये ना करें:

10. कपासमेंपर्ण कुंचन वायरस के प्रकोप को रोकने के लए उत्तर भारतीय क्षेत्रों में देर से (15 मई के बाद) कपास की बुआई करने से बचें।
11. कीटों के प्राकृतिक एवं स्वाभा वक जै वक नियंत्रण के लए जहां तक संभव हो सके फसल के पहले दो माह तक रासायनिक कीटनाशक के उपयोग नाकरें।
12. कपास के पत्ता मरोड़क (लीफ फोल्डर) के नाबा लक और नगण्य लेप्टोटेरीन कीटों जैसे की साइलेप्टा डेरोगेटा एमोनिस फ्लेवा और से मलूपर के लए कीटनाशक का छिडकाव न करें। इनके लार्वा से कपास की नगण्य नुकसान होता है। ये पैरा सतएड की लए मेजबान के रूप में सेवा देता है। जैसे ट्राइकोडर्मा, एपेंटेल्स और साइसीरोपा फार्मोसा प्रजाति जो हेलोकोवर्पा आर्जिमेरा और अन्य बालवर्म पर हमला कर उनको नष्ट करता है।
13. चयन के दबाव से बचने के लए बीटी कपास पर बीटी-योगों का स्प्रे न करें।
14. पत्तों से संबन्धित नियोनिकोटिनाइडकीटनाशकों का उपयोग करने से बचेंजैसे क एसेटामी प्रड), ई मडाक्लो प्रड क्लो थए डन औरथाईमेथोजेम,चूं क संकर कपास के बीज इमेडाक्लों प्रड से उपचरित होते हैं इस लए कीटों मेंइनके और उपयोग से इनके प्रति प्रतिरोध क्षमता बढ़ जाने की संभावना होती है।
15. डब्ल्यूएचओ ग्रेड -1 कीटनाशकों का उपयोग न करें। अत्यंत खतरनाक श्रेणीके कीटनाशकों जैसे कफास्फे मडोन मथाइलपैरा थओन,फोरेटे,मोनोक्रोटोफॉसडाईक्लोर्वोसकार्बोफुरानट्राईज़ोफासऔरमेटासाइस्टोस।
16. फप्रोनिलऔर पाइरेथ्रोइडसफेद मक्खी (व्हाइटफ्लाई)के प्रकोप रोकने के लए न करें।
17. कीटनाशक मश्रण का उपयोग बिलकुल ना करें कीटनाशक मश्रण से पारिस्थितिकी प्रणा लयों (इको- सस्टम) बा धत होती है जो गंभीर रूप कीट प्रकोप आमंत्रित करती हैं।ये कीटनाशक ल क्षत नाशीकीटों के लए चयनित अति वषैले है जब क कपास पारिस्थिकीतंत्र में लाभदायक कीटों के लए कम वषैले हैं। ये कीटनाशक पर्यावरण हितैषी कीटनाशक प्रतिरो धता प्रबंधन कार्यक्रम के लए उपयुक्त है।

गुलाबी सूँडी और चतिदार सूँडी : इनके लए आ थक हानि सीमा है – 10 हरे गुलरों में एक जी वत सूँडी मलने पर या लगातार तीन रातों में 8 पतंग (कट) प्रति ट्रेप प्रति रात पकड़ में आने पर; क्विनोलाफास 25 ईसी या का 2 मली प्रति लीटर पानी की दर से या थायो डकार्ब 75 डब्लू पी का या कोई पाइरेथ्रोइड का फसल पर छिड़काव करें।

अन्य कीटों का नियंत्रण:

1) स्पोडोप्टेरा लटुरा: इसइल्लेकेअण्ड पुंजों कोहाथ से इकत्र करें अथवा एसएनपीवी (स्पोडोप्टेरा लटुरा न्यूक्लियर पॉलीहेड्रो सस वायरस) का 500 एलई/हे. की दर से या नोवाल्यूरोन 10 ईसी का 200 मली या थायो डकार्ब (ला र्वन) 75 डब्लू पी 250 ग्राम पाउडर 250 लीटर पानी में मला कर प्रति एकड़ छिदकव करें।
2) प्ररोह घून के नुकसान को कम करने के लए प्रोफेनोफास 2 मली प्रति लीटर पानी की दर से फसल पर छिदकव करें।
3) भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में घोंगें का प्रकोप: अ धक वर्षा वाले क्षेत्रों में घोंघे का प्रकोप: प्रलोभक मेटेल्डीहाइड 2% (स्नेल कल) 12.5 क. ग्रा. /हे. की दर से घोंघों के छिपने की जगह पर प्रयोग करें । मेढों, फसल के चारों ओर उन जगहों पर डालें जहां इनका नुकसान दिखायीदे।

रोग प्रबंधन:

नवीन मुरझान (पैरा वल्ट) मुरझान/जड़ गलन:

कुछ खेतों में सूखा के बाद वर्षा होने या सचाई करने परइसके लक्षण फसल में दिखायी देते हैं। प्रभा वत पौधों पर मुरझान के लक्षण दिखायी देने के कुछ घंटों में ही कोबाल्ट क्लोराइड 10 म. ग्रा. प्रति लीटर पानी की दर (पीपीएम) से छिड़काव करे या प्रभा वत पौधों की जड़ों में कापर-आक्सी-क्लोराइड 25 ग्रा. तथा यूरिया 200 ग्राम या कार्बेडेजिम 1 ग्रा./लीटर की दर से 10 लीटर पानी लेकर म ी को तर करें।

गूलर सड़न: साधारणतः प्रारम्भिक वक सत पौधे के निचले हिस्से के गूलर बादलों के मौसम या लगातार रिम झम बारिसहोते रहने की स्थिति में गूलर सड़ जाता है। मैकोजेब 75 डब्लूपी + क्लोरो थेलोनिल 70 डब्लूपी प्रत्येक 2 ग्राम पाउडर प्रति लीटर पानी की दर से ले कर फसल पर छिड़काव करें। अच्छा पराभव लाने के लए सल्वेट 99 के 10 ग्राम या 10 ग्राम ट्राइट्न 50 मली 100 लीटर पानी की दर से मलाए।

एल्टरनेरिया अंगमारी: मैंकोजेब 25 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से फसल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें।

माइरोथे सयम पत्ती धब्बा रोग और जीवाणु झुलसा: स्टेप्टोसाइक्लीन सल्फेट (15-20 ग्रा./हे.)+कापरआक्सीक्लोराइड (2000 ग्रा./हे.) 200-250 लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।

खरपतवार प्रबंधन: छोटे खरपटवारों पर खरपतवारनाशक अ धक प्रभावी होते हैं।

घांसें: क्वीजेलोपोफ- इथाइल या फेनोक्साप्रोप-इथाइल या फ्लूएजीफ़ोप-ब्यूटाइल का छिड़काव।

नरकर और घासें: प्रोपेक्विजाफोप-इथाइल का छिड़काव करें।

चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार: पाइरो थयोबेक सो डयम का छिड़काव करें।

खरपतवारों उगने पर खरपतवार नाशकों से उनका समयबद्ध एवं प्रभावी नियंत्रण होता है। जब खेत की म ी गीली हो तो हाथ से निराई में मुश्किल हो जाती है ऐसे नेंशाकनाशी वशेष रूप से प्रभावी और समय पर नियंत्रण प्रदान करता है। खरपतवारनाशी (हर्बीसाइड) नवजात खरपतवारों (10-15 दिनों आयु से कम) पर अ धक प्रभावी एवं कारगर होते हैं। घाँसकुल के खरपतवारों के नियंत्रण के लए क्लोजईलोफोपइथाइल, फेनोक्सप्रोप सो डयम, फ्लुयाजीफोप ब्यूटाइल,का प्रयोग कर सकतें हैं। नरकर और घासों के लए पायरिथोबक ईथाइल हैं और चौड़ी पत्तीवाले खरपतवारों के लए पायरीओ थबेक सो डयम कारगर है। अ धक जानकारी के कए कृ ष वश्व वधालयों ए तकनीकी वशेषज्ञों से वचार वमर्श कर सकते हैं।

जल जमाव प्रबंधन: कपास अतिरिक्त पानी के लए बहुत संवेदनशील है। मध्य और द क्षण भारत के कई हिस्सों में अ धक बारिश कारण के पानी का जमाव होने सेसमस्याग्रस्त कया जा सकता है।गहरी काली म ी पर उगाए गए कपास जहां पानी निकासी व्यवस्था कमजोर है वहाँ जल जमाव की वजह से कपास की फसक प्रभा वत है।भारी वर्षा की स्थिति में खेतों सेपानी निकासी के लए भू म के ढलान के साथ पर्याप्त मात्रा में जल निकासी चैनलों याअतिरिक्ततरीके से पानी निकासी की व्यवस्था करें।उन क्षेत्रों में जहां वर्षाअ धमानतः 700-900 mmी हो वहां म ी में बेहतर की नमी संरक्षणके लएभू म को पुनः निर्माण कर लकीरें (रिजेज़) रिज हल की मदद से बनाए। यह तकनीकी और कपास की लकीर (रिजेज़) में बुवाई से वर्षा जल का संरक्षण होगा और ये रिजेज़ और फ़रोज भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में अतिरिक्तजल के लए जल निकासी चैनलों की तरह कार्य करतें है।

ड्रेनेज चैनलखेतों की सीमाओं में साथ खोला जाना चाहिए, जिससे अतिरिक्त जल आसानी से खेतों से निकाला जा सके। यदि बुवाई अभी तक पूरा नहीं कया गया तो रिजेज़ और फ़रोजके शीर्ष में तुरंत बुवाई शुरू करने के लए सफारिश की है।यह मानना है क रिजेज़ के शीर्ष पर लगाकर लकीरें अतिरिक्त पानी बाहर निकाल जाएगा जिससे भारी बारिश फसल को प्रभा वत नहीं करेगा क्यों क रिजेज़ और फ़रोज के निर्माण से अतिरिक्त जल खेतों से बाहर निकाल जाएगा। यदि भारी बारिश के मौसम का पूर्वानुमान कर रहे हैं तो फसल उत्पादन लागत घाटे को कम करने की लए उर्वरक छिदकव स्थ गत कया जा सकता है।

फसल जल जमाव के कारण पौधा पीला हो जाता है तो 0.5-1.0% डीएपी या 19:19:19 (नाइट्रोजन के घुलनशील यो गक) का पत्तों पर साप्ताहिक अंतराल में छिड़काव (फो लयर स्प्रे) करने से पौधों जल जमाव के प्रभाव से उबरने में मदद मलेगी।

साप्ताहिक मौसम सलाहकार रिपोर्ट समन्वय टीम:	
वैज्ञानिक	पता
डॉ. के.आर.क्रांति	निदेशक, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ.ए.एच.प्रकाश	प्रधान वैज्ञानिक,एवं प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (त मलनाडु)
डॉ. डी.मोंगा	प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, सरसा (हरियाणा)
डॉ एस.बी. संह	प्रधान, फसल सुधार वभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. संध्या क्रांति	प्रधान, फसल संरक्षण वभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ब्लेज़ डीसूजा	प्रधान, फसल उत्पादन वभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. इसाबेला अग्रवाल	वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (त मलनाडु)
श्री एम.सबेस	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (त मलनाडु)

वैज्ञानिक	पता	मोबाइल नं.	ईमेल
डॉ. परमजीत संह	पंजाब कृ ष वश्व वद्यालय,(पंजाब)	**9463628801**	rsmeenars@gmail.com
डॉ. पंकज राठोर	पंजाब कृ ष वश्व वद्यालय, (पंजाब)	**9464051995**	pankaj@pau.edu
डॉ. जगदीश बेनीवाल	सीसीएस-हरियाणा कृ ष वश्व वद्यालय, हिसार-125004 (हरियाणा)	**9416325420**	cotton@hau.ernet.in
डॉ. एस. एल.आहूजा	सीसीएस-हरियाणा कृ ष वश्व वद्यालय, सरसा-125004 (हरियाणा)	**9255947380**	slahuja2002@yahoo.com

डॉ. के. एन. भाटिया	स्वामी केशवानन्द राजस्थान,कृ ष वश्व वद्यालय, गंगानगर (राजस्थान)	**9352700411**	bsmeena1969@rediffmail.com
डॉ. हरफूल मीणा	महारणा प्रताप, कृ ष एवं तकनीकी वश्व वद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)	**9460246043**	hpagron@rediffmail.com
डॉ. एस. एल.आहूजा	सीसीएस-हरियाणा कृ ष वश्व वद्यालय, सरसा-124004 (हरियाणा)	**9255947380**	slahuja2002@yahoo.com
डॉ. नरेंद्र कुमार	सीएसए- कृ ष एवं तकनीकी वश्व वद्यालय, कानपुर (उ. प्र.)	**9335699132**	jagdishk64@yahoo.com
डॉ. गोफाल्डू	नवासारी कृ ष वश्व वद्यालय, नवासारी-396450 (गुजरात)	**9662532645**	girishfaldu@rediffmail.com
डॉ. एम.डी. खानपारा	जूनागढ़ कृ ष वश्व वद्यालय, जूनागढ़ -362001 (गुजरात)	**9426990070**	cotton@jau.in
डॉ. आर.डब्लू. भरूद	महात्मा फुले कृ ष वद्याहपीठ, रीउरी-413722 (महाराष्ट्र)	**9850244087**	cotton_mpkv@rediffmail.com
डॉ. आर.आर. पाटिल	पंजाब राव देशमुख कृ ष वद्याहपीठ, अकोला-441104 (महाराष्ट्र)	**9657725801**	srscottonpdkv1@yahoo.co.in
डॉ.पी.आर.झाँवर	मराठवाड़ा कृ ष वश्व वद्यालय, प्रभनी-431402 (महाराष्ट्र)	**7588151244**	crsned@indiatimes.com
डॉ. सतीश परसाई	आर.वी.एस. कृ ष वश्व वद्यालय, ग्वा लयर-472002 (म.प्र.)	**9406677601**	aiccipkhandwa@gmail.com
डॉ. बी.एस. नायक	उड़ीसा-कृ ष एवं तकनीकी वश्व वद्यालय,भुवनेश्वर-751003 (उड़ीसा)	**9437321675**	bsnayak2007@rediffmail.com
डॉ. एस. भारती	आचार्य एन जी रंगा कृ ष वश्व वद्यालय, एलएएम गुंटूर (आंध्रप्रदेश)	**949072341**	bharathi_says@yahoo.com
डॉ. शर्मा	आचार्य एन जी रंगा कृ ष वश्व वद्यालय, नांदयाल (आंध्रप्रदेश)	**08514-242296**	sharmarars@gmail.com
डॉ. अलादिक ी	धारवाड़ कृ ष वश्व वद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)	**9448861040**	yraladakatti@rediffmail.com
डॉ. भीमना	रायचूर कृ ष वश्व वद्यालय, रायचूर-584102 (कर्नाटक)	**9448633232**	bheemuent@rediffmail.com

नोट: यदि अधो ल खत जानकारी (जैसे: कीटनाशक, रसायन, क्षेत्र या कस मात्रा या संख्या) में दु वधा हो तो संका समाधान के लए अंग्रेजी अंक से संका समाधान करें।

हिन्दी संसकरण: रजनीकान्त चतुर्वेदी, वरिष्ठ तकनीकी अ धकारी
केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, पांजरी, वर्धा रोड, नागपुर-441108 (महाराष्ट्र)
दूरभाष-0**7103,275549**, ईमेल: **cicrnagpur@gmail.com** वेबसाइट: **www.cicr.org.in**

कपास की खेती के लए साप्ताहिक सलाह सं **6**/2015 13 से 19 जुलाई साप्ताहिक सलाह (35 मानक सप्ताह)

-- इति --